[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3603
INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

'कवि की रंगशाला'

डॉ. संध्या गंगराड़े
प्राध्यापक – हिन्दी
माता जीजा बाई शासकीय, स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, इंदौर (म.प्र.)

वह विराट था हेम घोलता
नया रंग भरने को आज
कौन ? हुआ यह प्रश्न अचानक
और कुतूहल का था राज।[1]

सृष्टा, रचेता, विधाता जिस भी नाम से पुकारें उस परम शक्ति को जो आकाश को नीला, धरती को हरा, सूरज को स्वर्ण और चाँद को रजत रंग में रंग देता है। वन प्रान्तर में पुष्पावलि के रंग अनगिनत है और सागर में जल–जीवों के रंग अद्‌भुत। रंगहीन जल भी उसी का चमत्कार है और गंगा, यमुना और सरस्वती का श्वेत, श्याम और लाल रंग भी उसी की अभिव्यक्ति है।कवि भी रचेता है 'कविर्मनीषी परिभू स्वयंभू' जीवन के जगत के, प्रकृति के रंगो को कवि पूरी संवेदन शीलता से संयोजित करता है। काव्य में मुख्य रूप से तीन रंग आधारभूत रंग है– श्वेत, श्याम, रतनान–सफेद, काला और लाल।

अमीय हलाहल मदभरे, श्वेत, श्याम, रतनार।
जियत, मरत, झुकि–झुकि परत, जिहिं चितवत इक बार।।[2]

श्वेत स्वच्छता, पवित्रता, उज्ज्वलता, सात्विकता और सौन्दर्य का रंग है। श्याम यूँ तो हिन्दी काव्य में श्रीकृष्ण का रंग है, परन्तु इससे इतर यह तामसिकता अंधकार बुराई और असत का प्रतीक है; लाल रंग ऐश्वर्य वैभव और अनुराग का रंग माना गया है। नयनों के वर्णन में कवियों ने इन तीनों रंगों का समावेश कर आँखों को नवीन सौन्दर्य और आकर्षण से भर दिया है – अब उर्पयुक्त दोहे को ही लें, आँखों में तीन रंग श्वेत आँखें, उसमें श्याम रंग की पुतली और उसमें लाल डोरे। श्वेत है अमृत, श्याम है विष और लाल है मदिरा। इन आँखों को देखने वाला जीता है मरता है और मदहोश हो जाता है। है न, रगों का सुन्दर–संयोजन। चलिए बिहारी का यह दोहा लीजिए –

सायक सम मायक नयन, रंगे त्रिविध रंग जात।
झखौ बिलखि दुरि जात जल, लखि जल जात लजात।।[3]

संध्या काल के समान मायावी आँखे तीन रंगों में रंगी हुई है– लाल, काले, और श्वेत! संध्या काल जो दिवस और रात्रि का संधिकाल है, जिसमें रात्रि का श्याम और दिवस का श्वेत रंग मिलकर सांयकाल को एक मायावी लाल रंग दे रहा है। इस माया के प्रभाव के कारण नायिका के नयनों को देखकर मीन (नेत्रों को मीन की उपमा दी जाती है) जल में नीचे जा छिपी है और कमल (जल जात आँखें को कमल की उपमा भी दी जाती है) सांयकाल में स्वभातः ही बंद हो जाते है। कवि ने यहाँ उनके बंद होने को नायिका के नेत्रों से लज्जित होकर बंद होने की ओर संकेतित किया है। कवि का रंगों का चयन और उसकी अभिव्यक्ति अद्‌भुत है, संध्या काल में रंगों के इस संयोजन को कवि ही देख सकता है और शब्दों में बाँध सकता है। देखें, निराला इसी सांयकाल को इन शब्दों में कहते हैं जिसमें सांयकाल का आगमन तो है ही साथ में बादलों का रंग भी है –

दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से
उतर रही, संध्या सुन्दरी
परी सी, धीरे, धीरे, धीरे।[4]

सांयकाल के त्रिविध रंगों में अब एक और नवीनता आ गई है 'मेघमय', सांयकाल और उस पर मेघाच्छादित आसमान; कवि की तूलिका ने रंगों के संयोजन से संध्या काल को संध्या सुन्दरी बना दिया, नायिका बना दिया।

तीन रंगों का संयोजन तो काव्य में मिलता ही है। दो रंगों का संयोजन भी चमत्कृत करने वाला है, देखें –

सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने जात।
मनो नील मनि सैल पर, आतप पर्‌यो प्रभात।।[5]

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

श्री कृष्ण श्याम वर्ण के सुन्दर शरीर पर पीताम्बर ओढ़े हैं – श्याम और पीत वर्ण के संयोजन के लिए कवि बिहारी कहां से उपमान लाए हैं – मानों नीलमणि के पर्वत पर (श्रीकृष्ण के कृष्ण वर्ण) पर प्रातः कालीन सूर्य का प्रकाश पीत वर्णी (पीताम्बर) गिर रहा है।यह तो हुआ श्याम और पीत वर्ण का संयोजन अब देखिए श्याम और श्वेत रंग का संयोजन –

बाँधा था विधु को किसने
इन काली जंजीरों से
मणी वाले फणियों का मुख
क्यों भरा हुआ हीरो से।[6]

चन्द्रमा की उज्ज्वलता नायिका के गौर वर्ण से साम्य रखती है और मुख पर बिखरी हुई अलकें काली जंजीरे है। यही नही कवि प्रसाद ने नायिका के कांति युक्त मुख को हीरों की बहु आयामी चमक के साथ रखते हुए केश राशि का फणियो (फन धारी सर्प) की कांति से साम्य स्थापित किया है। प्रसाद जी सौन्दर्य चित्रण में नवीन रंगों का संयोजन करते दिखाई देते हैं। गौर वर्ण श्रद्धा ने 'मसृण गांधार देश के नील रोम मेषें के चर्म' से अपनी देह को ढँका है, ऐसे में उसके शरीर का कोमल अंग कहीं–कहीं झलक उठता है जिसे कवि ने 'बिजली का फूल' कहा है। देखें –

नील परिधान बीच सुकुमार,
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग,
खिला हो ज्यों बिजली का फूल
मेघ–बन बीच गुलाबी रंग।[7]

यह रंगो का संयोजन मात्र ही नही यह एक सम्पूर्ण चित्र भी है। श्रद्धा के गौर वर्ण के साथ तो फिर कवि ने श्याम, श्वेत, नीले और गुलाबी रंगो की लड़ी ही पिरो दी है, 'सित सरोज पर क्रीड़ा करता, जैसे मधुमय पिंग पराग' श्वेत और सुनहरे रंग का संयोजन है। कवि ने प्रातः कालीन प्रकाश को भी 'सुनहला' कहकर आशा के संचार की ओर इंगित किया है –

उषा सुनहले तीर बरसाती
जय–लक्ष्मी सी उदित हुई;
उधर पराजित काल रात्रि भी
जल में अन्तर्निहित हुई।[8]

रंगों का 'कन्ट्रास्ट' दृश्य को 'बैकग्राउण्ड' के साथ और अधिक प्रभावी बना देता है। 'राम की शक्ति पूजा' में निराला ने राम की मनोदशा का रंगों के साथ सामन्जस्य करके जो दृश्य उपस्थित किया है वह अद्भुत है 'है अमा निशा उगलता गगन घन अंधकार' के साथ 'केवल जलती मशाल' एक ओर निराशा का गाढ़ा पन है तो आशा की ज्योति भी है।

दो रंगो के मिलने से एक नया रंग बनता है परन्तु दो रंगों की एक दूसरे पर छाया पड़ने से जो धूप छांही रंग बनता है उसे कवि बिहारी ने वयः संधि काल का रंग कहा है –

घुटी न सिसुता की झलक, झलक्यो जोबन 'अंग'।
दीपति देह दुहन मिली, दिपत ताफता रंग।।[9]

ताफता दो रंगो के मेल से कपड़े में जो घूप छांही रंग आता है उसे ताफता कहते है। फारसी का 'ताफ्तः' हिन्दी में ताफता हुआ। बिहारी का एक अन्य दोहा है –

मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोई।
जा तन की झाँई परे, स्याम हरित दुति होई।।[10]

गौर वर्णी राधा और श्याम वर्णी कृष्ण – राधा के गौर वर्ण की झाँई कृष्ण के श्याम वर्ण पर पड़ने से 'हरित प्रकाश' बिम्बित हो रहा है। है ना! कवि को रंगों की पक्की समझ। यहाँ रंग नहीं मिल रहे, मिल रही है रंगों की झाँई काले और सफेद को नहीं उनकी झाँई को मिलाएँ और बना लें हरा रंग, प्रसन्नता का रंग, भक्ति का रंग।

प्रकृित के रंग वसुन्धरा, आकाश, सागर, पर्वत, नदी, पुष्प और ऋतु परिवर्तन के रंग, ऋतुराज बसंत के रंग, पलाश और अमलतास के रंग..... रंग और रंग। बसंत निराला की प्रिय ऋतु और उसमें बिखरे रंगों की छटा –

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

कूची, तुम्हारी फिरी कानन में
फूलों के आनन–आनन में
फूटे रंग बसन्ती, गुलाबी
लाल–पलास लिए सुख–स्वाबी
नील, श्वेत शतदल सर के जल
चमके हैं केशर पंचानन में।[11]

मुक्तिबोध की रंग शाला में रंग भी 'अंधेरे में' रहस्यपूर्ण हो उठे है। रंग और रंगों के बिम्ब। लाल, स्याम, काला, गेरूआ, नीला और..... और..... और। लाल रंग लें..... लाल–लाल मशाल, लाल–लाल कुहरा, रक्तालोक स्नात पुरूष। भक्ति कालीन अनुराग, प्रेम और भक्ति का लाल रंग यहाँ क्रांति का, विद्रोह का रंग है। और रात्रि का रहस्यपूर्ण, उलझाव से भरा, फैंटेसी का रंग! मुक्तिबोध के यहाँ रंग नवीन अर्थो की व्यंजना करते है –

- **काले–काले घोड़ों पर खाकी मिलिट्री–ड्रेस**
  चेहरे का आधा भाग सिन्दूरी–गेरूआ
  आधा भाग कोलतारी भैरव[12]
- **उदास मटमैला मन–रूपी वल्मीक[13]**
- **सुनसान चौराहा, सांवला फैला**
  बीच में वीरान गेरूआ घण्टाघर
  ऊपर कत्थई बुजुर्ग गुम्बद
  सांवली हवाओं में काल टहलता
  रात में पीले हैं चार घड़ी चेहरे।[14]

रंगकर्मी, चित्रकार रंगों से कैनवास पर रंगों से चित्रकारी करता है और चित्र बोल उठते है। कवि भी रंगों का सूक्ष्म जानकार होता है और वह विराट शक्ति जो इस सृष्टि को रचती है, जो इसे रंगों से भरती है, उसके लिए तुलसी बाबा लिखते हैं – 'सून्य भीति पर चित्र, रंग नहिं, तनु बिनु लिखा चितेरे' है ना उस सृष्टा का कमाल और साथ में कवि का भी।

संदर्भ सची :–

1. *कामायनी* — *जयशंकर प्रसाद रसलीन* — *पृ. 32*
2. *बिहारी रत्नाकर* — *जगन्नाथ दास रत्नाकर* — *पृ. 284*
3.
4. *बिहारी रत्नाकर* — *जगन्नाथ दास रत्नाकर* — *पृ.*
5. *आँसू* — *जयशंकर प्रसाद ग्रंथावली संपादक सत्यप्रकाश मिश्र जी* — *पृ. 309*
6. *कामायनी* — *जयशंकर प्रसाद* — *पृ. 54*
7. *कामायनी* — *जयशंकर प्रसाद* — *पृ. 31*
8. *बिहारी रत्नाकर* — *जगन्नाथ दास रत्नाकर* — *पृ. 34*
9. *बिहारी रत्नाकर* — *जगन्नाथ दास रत्नाकर* — *पृ. 01*
10. *निराला रचनावली* — *संपादक नन्द किशोर नवल* — *पृ. 447*
11. *लंबी कविताएँ अंधेरे में–मुक्तिबोध* — *सं. नरेन्द्र मोहन* — *पृ. 96*
12. *लंबी कविताएँ अंधेरे में–मुक्तिबोध* — *सं. नरेन्द्र मोहन* — *पृ. 97*
13. *लंबी कविताएँ अंधेरे में–मुक्तिबोध* — *सं. नरेन्द्र मोहन* — *पृ. 104*